Page No.
Date: / /

यथार्थवाद (Realism)

यथार्थवाद वस्तु के अस्तित्व सम्बन्धी विचारो का एक एक दृष्टिकोण हैं। यह इन्द्रिय ग्राह्य भौतिक पदार्थ और भौतिक संसार को सत्य मानता हैं।
इसका विकास आदर्शवाद के विरोध में हुआ
अतः यह भौतिक वादी दर्शन हैं।

सिद्धान्त →

(1) ब्रह्माण्ड पदार्थ जन्य है।
(2) भौतिक संसार ही सत्य है आध्यात्मिक नही।
(3) मन जगत की वस्तु हैं। योग ही मन है।
(4) मनुष्य जगत की वस्तु हैं।
(5) वस्तु जगत का ज्ञान जरूरी है।
(6) वास्तविक वस्तुजगत ज्ञान हेतु भौतिक विज्ञान का ज्ञान जरूरी है
(7) निरीक्षण, अवलोकन व विश्लेषण का आधार सत्य का निर्माण

इसका विकास 15वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक माना जाता हैं। इस क्षेत्र मे इरेसमस, रैबल, लार्ड, मान्टेन, मूलकास्टर बेकन, कमेनियस, हाबर, मिल्टन, जान लॉक 7.8 रॉस बटलर

यथार्थवाद, संसार को उसी रूप में स्वीकार करता हैं जिस रूप में वह दिखाई देता हैं।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date : / /

रॉस महोदय → "यथार्थवाद यह स्वीकार करता है कि जो कुछ हम प्रत्यक्ष मे अनुभव करते हैं उनके पीछे तथा मिलता जुलता वस्तुओ का एक यथार्थ जागत है।"

विशेषताएँ →
(1) भावुकता व कल्पना को स्थान नही हैं
(2) वाह्य इन्द्रिय ही वास्तविक हैं।
(3) मनुष्य को सिर्फ कर्मठ होना चाहिए, आध्यात्मिक नही
(4) वर्तमान + व्यवहारिकता ही सत्य है।
(5) व्यक्तिकता + समाजिकता

यथार्थवाद और शिक्षा →
पूरी तरह से वैज्ञानिक शिक्षा पर आधारित है।
(1) शारीरिक, व्यवसायिक, मानसिक शिक्षा पर बल।
(2) बाह्य इन्द्रिय प्रशिक्षण पर बल।
(3) शिक्षा का अर्थ कर्मेन्द्रियों का विकास
(4) अवलोकन, सामान्नीकरण, नियमीकरण, प्रयोग आदि का ज्ञान मानव हेतु जरूरी हैं।
(5) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास
(6) आगमन पद्धति पर बल
(7) पुस्तकीय ज्ञान का विरोध (प्रकृतिवाद, यथार्थवाद)
(8) वर्तमान व व्यवहारिक जीवन पर बल
(9) बालक को नियन्त्रित व स्वतन्त्रता
(10) शिक्षा के व्यवसायीकरण पर बल

Scanned with CamScanner

यथार्थवाद के गुण

1. यह शिक्षा के व्यवहारिक और यथार्थ (वास्तविक) वास्तविकता पर बल देता है।
2. पाठ्यक्रम को विस्तृत रूप प्रदान करता है।
3. वैज्ञानिकता को महत्व देते हैं।
4. धर्म व नैतिकता को कोई स्थान नहीं है।
5. व्यक्ति भावात्मक पक्ष की उपेक्षा।
6. तत्व मीमांसा की उपेक्षा।

पाठ्यक्रम

पूर्णतः विज्ञान व तकनीकि आधारित होना चाहिए

लौकिक विषय

- विज्ञान → पदार्थों का ज्ञान
- साहित्य
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण → प्रयोगशाला

मान्यताएँ व उद्देश्य :—

(1) विश्लेषण, निरीक्षण, वैज्ञानिकता पर बल

(2) मानव भौतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

(3) वास्तविकता पर बल।

(4) सामाजिक जीवन सर्वोपरि है।

(5) वैचारिकता केवल वैज्ञानिक होनी चाहिए

(6) भौतिकता सर्वोपरि है।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date: / /

अनुशासन एवं विधियां

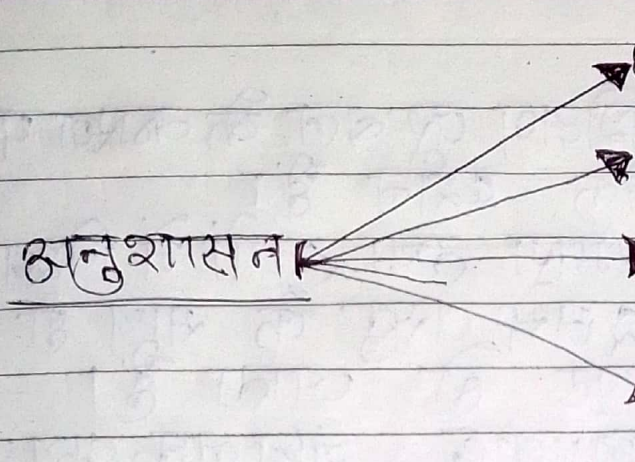

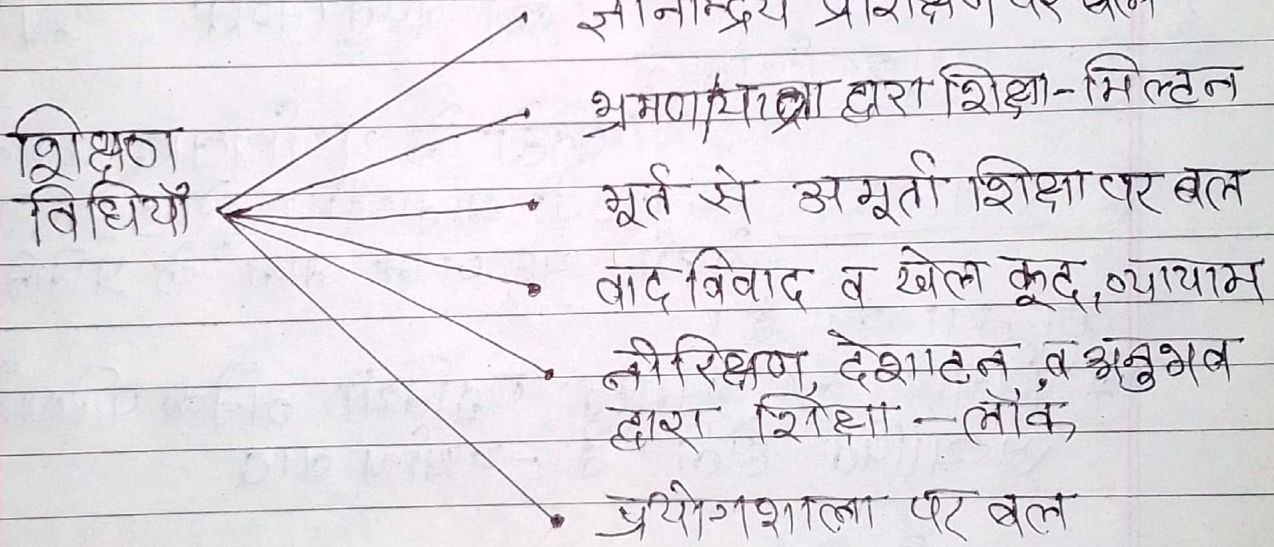

अनुशासन
- अन्तः प्रेरित
- लचीला
- सीमित स्वतन्त्रता
- सामाजिक अनुशासन पर बल

शिक्षण विधियाँ
- ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण पर बल
- भ्रमण/यात्रा द्वारा शिक्षा - मिल्टन
- मूर्त से अमूर्त शिक्षा पर बल
- वाद विवाद व खेल कूद, व्यायाम
- निरीक्षण, देशाटन, व अनुभव द्वारा शिक्षा - लॉक
- प्रयोगशाला पर बल

अतः यथार्थवाद में सत्यज्ञान हेतु अनुभव का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है तथा उन्ही आदर्शों को स्वीकार किया जाता है जिनका सम्बन्ध और वर्तमान और व्यवहारिक जीवन से होता है।

यह आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार नही करता करती और प्रतिपादित करती हैं कि मनुष्य का अन्तिम उद्देश्य सुख पूर्वक जीना है।

Scanned with CamScanner

महत्वपूर्ण तथ्य

Impor Itant

(1) ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण पर बल के कारण यथार्थ वाद मनोवैज्ञानिक दर्शन है।

(2) यथार्थवाद परम्परा तथा तथ्यों में विश्वास करता है। इससे वस्तु के साथ ही यथार्थ ज्ञान स्पष्ट हो जाता है।

(3) वैज्ञानिक यथार्थवाद जॉन लॉक द्वारा प्रतिपादित किया गया

(4) प्रतिनिधित्ववाद → (1) विचारो का आत्मगत (2) वस्तु जगत ← लॉक द्वारा

(5) नव्य यथार्थवाद

प्लेटो के यथार्थवाद का नया रूप

(6) समीक्षावाद → (20वीं शताब्दी) डुरेण्ड ड्रेक, रायवुड सेलर्स यह जान लाक के प्रतिनिधित्ववाद का नया रूप है।

(7) विचारो की समस्त पद्धतियाँ अनेक परिणामो द्वारा सत्यापित होती है - यथार्थ वाद

(8) उपयोगिता तथा बदलाव

(9) ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण बल के कारण यथार्थवाद मनोवैज्ञानिक दर्शन भी है इसमे वस्तु के साथ-साथ ही यथार्थ ज्ञान स्पष्ट हो जाता है।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date : / /

पर्यायवाद का शिक्षा में योगदान

किसी वस्तु, क्रिया अथवा विचार का मूल्यांकन योगदान पूर्व निश्चित मानदण्डो के आधार पर किया जाता है।

शिक्षा मनुष्य के निर्माण की प्रक्रिया है। उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि की प्रक्रिया करने और उसके आचार विचार और व्यवहार को उचित दिशा प्रदान करने की प्रक्रिया है। अब यह परिवर्तन व विकास किस प्रकार का हो यह समाज विशेष की की तत्कालीन परिस्थितियों और उसकी भविष्य की सम्भवनाओ और आकांक्षाओ पर निर्भर करता है। तब किसी शैक्षिक चिन्तन अथवा व्यवस्था का मूल्यांकन समाज विशेष की वर्तमान परिस्थितियो और भविष्य की सम्भवनाओ और आकांक्षाओं पर ही किया जाना चाहिए।

हमने यहाँ ऐसा प्रयास किया है और यथार्थवादी शिक्षा का मूल्यांकन भारतीय समाज की वर्तमान परिस्थितियो और भविष्य की सम्भवनाओ एवं आकांक्षाओं के आधार पर किया है।

यथार्थ वाद का शिक्षा में योगदान आगे भी है जो निम्नलिखित है